KISAN PLUS TV | KISAN PLUS Radio

RNI NO. MPHIN/2022/85285
डाक पंजी. क्र.- MP/KDW/93/2023-24
Email id: haldharkisankgn@gmail.com

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र

हलधर किसान

वर्ष 03 अंक 04 | 2024 | पृष्ठ- 8 मूल्य- 5.00 रुपए

293 एनडीए	234 इंडिया	16 अन्य	29 मप्र भाजपा	0 मप्र कांग्रेस

क्या तीसरे कार्यकाल में भी पीएम मोदी के लिए आसान होगा नए निर्णय लेना?

नरेंद्र मोदी पहली बार बनेंगे मिली.जुली सरकार के प्रधानमंत्री

लोकसभा चुनाव में परिणामों के बाद जेडीयू सुप्रीमो नीतीश और टीडीपी के चंद्रबाबू सहित अन्य घटक दलों के साथ तीसरी बार बन रही मोदी सरकार में क्या पिछले दो कार्यकाल की तरह इस बार भी सरकार मनमाने निर्णय ले सकेगी, यह समय बताएगा, लेकिन राजनीति के जानकारों के अनुसार गठबंधन सरकार में कोई भी बड़ा निर्णय लेना आसान नही होता, जो भाजपा और पीएम के एजेंडे है, उससे गठबंधन दल कितना सरोकार रखते है, यह कहा नही जा सकता। बहरहाल, तमाम हालात साफ होने के बाद आखिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पहली बार मिली. जुली सरकार बनने जा रही है। निश्चित रूप से इस बार उनके सामने नई चुनौतियां होंगी लेकिन जिस विश्वास के साथ वे आगे बढ़ रहे हैं, लगता है मिली. जुली सरकार को भी भली.भांति चला लेंगे। राजनीति में कब मुलायम होना है और कब कठोर, यह वे अच्छी तरह जानते हैं।

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव परिणामों राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के बहुमत का आंकड़ा पार करने के साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे है। इनसे पहले देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम तीन बार प्रधानमंत्री बनने का रेकॉर्ड दर्ज था। हालांकि पीएम मोदी के लगातार तीसरी बार सत्ता में आने और नेहरू के रेकॉर्ड में एक बड़ा फर्क जरुर है। पीएम मोदी ने चुनावी नतीजों की तस्वीर साफहोने के बाद एक पोस्ट में कहा, देश की जनता.जनार्दन ने एनडीए पर लगातार तीसरी बार अपना विश्वास जताया है। भारत के इतिहास में ये एक अभूतपूर्व पल है। मैं इस स्नेह और आशीर्वाद के लिए अपने परिवारजनों को नमन करता हूं।

उल्लेखनीय है कि बीजेपी ने सबसे ज्यादा सीटों पर जीत दर्ज की है। हालांकि फिर भी बहुमत का आंकड़ा पार नहीं कर पाई। वहीं इस चुनाव में कांग्रेस ने शानदार वापसी करते हुए 99 सीटों पर जीत हासिल की है। जबकि 2014 के चुनाव में बीजेपी ने पीएम मोदी की अगुआई में 282 और 2019 चुनाव में 303 सीटें जीतकर अकेले दम पर बहुमत हासिल किया था, लेकिन इस बार बीजेपी अकेले दम पर बहुमत के लिए जरूरी 272 सीटों के आंकड़े से काफी पीछे है और सहयोगी दलों को मिलाकर एनडीए बहुमत हासिल कर पाया है। दूसरी ओर, 1951.52 में पहले आम चुनाव में नेहरू की अगुवाई में कांग्रेस को 364 सीटें मिली थीं। 1957 में हुए दूसरे चुनाव में कांग्रेस को 371 सीटें मिलीं और नेहरू फिर प्रधानमंत्री बने। 1962 में हुए तीसरे चुनाव में भी कांग्रेस ने अपने दम पर बहुमत हासिल किया था। कांग्रेस को 361 सीटें मिलीं और नेहरू ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद संभाला था।नेहरू 1947 से 1964 तक पीएम रहे। 27 मई 1964 को उनका निधन हुआ।

उन्होंने 16 साल 286 दिनों तक सत्ता संभाली थी। 1966.1977 और 1980 से 1984 तक पीएम रहीं इंदिरा गांधी ने 15 साल 350 दिनों तक सत्ता संभाली थी। पीएम नरेंद्र मोदी 10 वर्षों से इस पद पर हैं और अब उनका तीसरा कार्यकाल शुरू होने वाला है।

एक बार ही 400 का आंकड़ा हुआ है पार

भारतीय जनता पार्टी और पीएम मोदी ने लोकसभा चुनाव में 400 पार का नारा दिया था, लेकिन वह अपना लक्ष्य हासिल नहीं पाए। भारतीय चुनावी इतिहास में यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य सिर्फ एक बार ही हासिल किया जा सका है, वह भी 1984 के लोकसभा चुनाव में। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए 1984 के चुनाव में राजीव गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को कुल 541 सीटों में से 414 सीटें मिली थीं। सबसे ज्यादा सीटों के साथ.साथ कांग्रेस को किसी एक पार्टी के लिए अब तक का सबसे ज़्यादा वोट शेयर भी मिला। उस वक्त कांग्रेस का वोट शेयर 48.12 प्रतिशत था। दूसरे स्थान पर सीपीआई (एम) रही थी। उसे 22 सीटें और 5.71 प्रतिशत वोट शेयर मिले थे। बीजेपी को तब 7.4 प्रतिशत वोट शेयर के साथ सिर्फ 2 सीटें मिली थीं।

कृषि क्षेत्र में रोजगार के बेहतर अवसर

राष्ट्रीय पाक्षिक समाचार पत्र हलधर किसान

कृषि पर निर्भरता कभी समाप्त नहीं हो सकती, इस वजह से इस क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। इसे हम कमाई के तौर पर उपयोग करें तो कोई भी इच्छुक व्यक्ति उपलब्ध खेत की भूमि पर पारंपरिक या आधुनिक खेती कर आत्म निर्भर बन सकता है। वहीं आज के समय में खेती में कई तकनीकें भी विकसित हो चुकी हैं, जिनका ज्ञान लेकर आप कृषि क्षेत्र में अच्छे पद पर नौकरी कर सकते हैं। आज हम इस अंक में आपको कृषि से जुड़े ऐसे क्षेत्र बताने जा रहे है, जिससे आप कृषि में रोज़गार के इन मौकों के अलावा, सरकार के खेती से जुड़े विभिन्न प्रोजेक्ट्स और योजनाओं के तहत रोजगार प्राप्त कर सकते है।

आईये जानते है, किन क्षेत्रों में हो सकते है रोजगार के अवसर–

एग्रीकल्चर इंजीनियर– कंप्यूटर एडेड टेक्नोलॉजी का प्रयोग करके नए उपकरणों और मशीनरी को डिजाइन करनेए मौजूदा खेती के तरीकों में सुधार करने की कोशिश करते हैं। आप किसानों और व्यवसायों को भूमि उपयोग पर सलाह देने, फसलों और आसपास के पर्यावरण पर प्रभाव का आकलन करने के लिए मौसम और जीपीएस से डेटा का भी इस्तेमाल करते हैं। इस भूमिका में एग्रीकल्चर इंजीनियर को एग्रीकल्चरल कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट का निरीक्षण करने की जिम्मेदारी भी मिल सकती है। इसके लिए आपको गणितए विज्ञान और समस्या समाधान के साथ.साथ रचनात्मक होने होने की जरूरत होती है। आप इस क्षेत्र में जाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से संबंधित विषय में डिग्री या डिप्लोमा ले सकते हैं।

कृषि अर्थशास्त्री– कृषि अर्थशास्त्री आर्थिक निर्णयों से संबंधित कार्य करते हैं, जैसे कि खरीददार किस तरह के कृषि उत्पाद ज़्यादा या कम खरीदते हैं, बाजार में किस कृषि उत्पाद का क्या मूल्य होना चाहिए और सरकार किसानों का समर्थन कैसे करती है। ये आर्थिक गतिविधियों को निर्धारित करने के लिए आर्थिक डेटा का विश्लेषण करते हैं। इसके अलावा कृषि अर्थशास्त्री खेतों में भूमि का सर्वेक्षण करने, किसानों से पूछताछ करने और अनुसंधान करने का कार्य भी करते हैं। कृषि अर्थशास्त्री मुख्य रूप से स्वतंत्र रूप से काम करते हैं, लेकिन उन्हें अन्य अर्थशास्त्रियों, किसानों और सांख्यिकीविदों के साथ सहयोग करना पड़ सकता है। कृषि अर्थशास्त्री बनने के इच्छुक लोग अर्थशास्त्र की डिग्री ले सकते हैं। इस भूमिका के लिए गणित की एक मजबूत समझ महत्वपूर्ण है और आपको डेटा का प्रभावी ढंग से विश्लेषण और व्याख्या करने और इसे स्पष्ट और कुशल तरीके से प्रस्तुत करने में सक्षम होना चाहिए।

फार्म मैनेजर– फार्म मैनेजर का कार्य फार्म के संचालन की निगरानी करना और बजट मापदंडों को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक निर्णय लेना होता है। इसके साथ ही फार्म मैनेजर कृषि भवनों व उपकरणों के रखरखाव और मरम्मत की व्यवस्था भी देखते हैं। फार्म मैनेजर का काम खेत की उपज को बाजार तक पहुंचाना होता है। इस भूमिका के लिए आपको खेती पर पिछले अनुभव के साथ.साथ तकनीकी जानकारी की जरूरत होगी। निजी कंपनियों में फार्म मैनेजर के तौर पर काम करने के लिए आपके पास कृषि संबंधी डिग्री होनी चाहिए।

प्लांट साइंटिस्ट एवं सॉइल– एक सॉइल एवं प्लांट साइंटिस्ट मिट्टी की संरचना का परीक्षण करते हैं कि यह पौधों की वृद्धि को कैसे प्रभावित करता है। ये भूमि के स्वास्थ्य से संबंधित डेटा को विस्तृत रिपोर्ट में प्रस्तुत करते हैं ताकि किसान को सलाह दी जा सके कि वे अपनी भूमि की उत्पादन शक्ति कैसे बढ़ाएं। सॉइल साइंटिस्ट किसानों को उन फसलों के बारे में सूचित करते हैं जो उनकी भूमि के लिए सबसे उपयुक्त हैं।

कमर्शियल हार्टिकल्चरिस्ट– एक कमर्शियल हार्टिकल्चरिस्ट पूरी उत्पादन प्रक्रिया की मॉनिटरिंग में शामिल होते हैं जिसमें. भोजन, फसलों और पौधों के बढ़ने, कटाई, पैकेजिंग, वितरण और बिक्री की मॉनिटरिंग करना आदि शामिल है। इसके अलावा रोजमर्रा की गतिविधियों में कर्मचारियों की देखरेख और प्रशिक्षण, कीट/ खरपतवार नियंत्रण कार्यक्रमों का प्रबंधन, व्यवसाय योजनाएं बनाना, नए कृषि उत्पाद विकसित करना, उत्पादों की मार्केटिंग करना, खरीदारों और विक्रेताओं के साथ अनुबंध पर बातचीत करना और तैयार उत्पादों को बेचने में मदद करना होता है। एक कमर्शियल हार्टिकल्चरिस्ट में मजबूत प्रबंधन क्षमता होना जरूरी होता है।

एग्रीकल्चरल सेल्सपर्सन– एग्रीकल्चरल सेल्सपर्सन का काम किसानों को मशीनरी, पशु चारा, उर्वरक और बीज बेचना होता है। इनसे अपने उत्पाद के एक्सपर्ट होने की अपेक्षा की जाती है और ये अक्सर किसानों को उत्पादों पर सलाह देते हैं। एग्रीकल्चरल सेल्सपर्सन किसान की जरूरतों को सुनते हैं और फिर उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सही प्रोडक्ट रिकमेंड करते हैं। यदि आप सेल्स में करियर बनाना चाहते हैं तो सेल्स और मार्केटिंग डिग्री जरूरी होती है।

बागवानी– फल, सब्जियां और फूलों की खेती में रुचि रखने वाले लोग बागवानी क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। यह खेती के विभिन्न पहलुओं में से एक है जिसमें नौकरी के अवसर हो सकते हैं।

पशुपालन– गाय, भैंस, बकरी, मुर्गी और अन्य पशुओं की पालना करने वाले युवा लोग भी खेती में अपना करियर बना सकते हैं। पशुपालन क्षेत्र में रोजगार के अवसर बहुत हैं और यह एक लाभकारी व्यवसाय भी हो सकता है।

आर्गेनिक फॉर्मिंग में करियर– आधुनिक जैविक कृषि तकनीकों के बढ़ते महत्व को बढ़ावा देने के लिए कई कॉलेजों और विश्वविद्यालयों ने जैविक कृषि पाठ्यक्रम बनाए हैं। इच्छुक उम्मीदवार जैविक खेती के साथ कृषि व्यवसाय में एक अच्छा पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद नर्सरी, खेतों और भूनिर्माण कंपनियों में प्रवेश स्तर के पदों के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। कुछ फार्म या कृषि व्यवसाय संभावित उम्मीदवारों को औपचारिक इंटर्नशिप भी प्रदान करते हैं। जैविक खेती में एक सफल पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद एक व्यक्ति जैविक खेती के व्यवसाय का विस्तार करने के लिए विपणन रणनीति सीख सकता है और उत्पादित भोजन पर प्रमाणित जैविक लेबल का दावा कर सकता है।

आर्गेनिक फार्मिंग में नौकरियां
- जैविक कृषि या खाद्य वैज्ञानिक
- जैविक किसान या रैंचर
- कार्बनिक हैंडलर
- कार्बनिक प्रमाणन एजेंट
- जैविक कृषि विज्ञान शिक्षक उत्तर माध्यमिक
- ऑर्गेनिक आला रिटेलर
- जैविक कृषि प्रबंधक
- कार्बनिक रेस्तरां

अरहर की बुआई के लिए जून. जुलाई का महीना बेहतर, उन्नत किस्मों के चयन से ले सकते है बेहतर उत्पादन

भोपाल. वर्तमान में दालों के भाव आसमान छूने रहे है, आगे भी इनके भावों में कमी का कोई अनुमान नही है, ऐसे में खरीफसीजन में अरहर की बुवाई की तैयारियों में जुटे किसानों को बुवाई और दवाओं के छिड़काव का सही तरीका जानना बेहद जरूरी है, क्योंकि, बंपर उपज पाने के लिए लापरवाही से किसानों को बचना होगा। अरहर की बुवाई के लिए खेत और मिट्टी तैयार करने के साथ ही बीज और उर्वरक की सही मात्रा का होना जरूरी है।

दलहन उत्पादन के क्षेत्र में किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये सरकार लगातार प्रयासरत है। इसी के साथ किसानों को अधिक उत्पादन देने वाली दाल की अच्छी किस्मों की खेती के लिये भी प्रोत्साहित मिल रहा है। दालों की खेती के बारे में बात करें तो भारत में अरहर दाल बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। दुनिया का 85 प्रतिशत अरहर उत्पादन भारत में ही होता है। इसकी खेती मुख्य रूप से महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और गुजरात में की जाती है।

अरहर दाल का उत्पादन शुष्क और नमी वाले क्षेत्रों में किया जाता है। इसकी खेती के लिये अच्छी सिंचाई के साथ सूर्य की ऊर्जा की भी जरूरत होती है। इसलिये इसकी बुवाई के लिये जून.जुलाई का महीना बेहतर माना जाता है। अच्छी उपज लेने के लिये अरहर को मटियार दोमट मिट्टी या रेतीली दोमट मिट्टी में उगा सकते हैं। अरहर की बुवाई से पहले खेतों में गोबर की कंपोस्ट खाद को डालकर मिट्टी को पोषण प्रदान करें। खेत में गहरी जुताईयों के बाद जल निकासी का प्रबंध करें, क्योंकि जलभराव से अरहर खराब हो जाती है। जून.जुलाई के मौसम में पहली बारिश पड़ते ही या जून के दूसरे सप्ताह से अरहर की बुवाई काम शुरु कर लें। बुवाई के लिये अरहर की मान्यता प्राप्त उन्नत किस्मों का ही चयन करें, इससे गुणवत्तापूर्ण उत्पादन लेने में मदद मिलेगी। खेतों में बुवाई से पहले बीजोपचार भी करना जरूरी है, जिससे फसल में कीट.रोग न लग पायें।

सिंचाई और पोषण प्रबंधन

खेतों में अरहर की बुवाई करने के बाद समय.समय पर निराई.गुड़ाई का काम करें और खरपतवारों को उखाड़कर जमीन में ही दबा दें। अरहर की फसल में बुआई के 30 दिन बाद फूल आने पर पहली सिंचाई कर लें।

दूसरी सिंचाई का काम फसल में फली आने पर यानी करीब 70 दिन करना चाहिये।

अरहर की सिंचाई बारिश पर ही निर्भर करती है, लेकिन कम बारिश पड़ने पर बुआई से 110 दिन बाद भी फसल में पानी लगे देना चाहिये।

अरहर में कीट और बीमारियों की निगरानी करते रहें और इनकी रोकथाम के लिये जैविक कीटनाशकों का ही इस्तेमाल करें। अरहर की फसल में फलियों में दाना पड़ते समय सिंचाई करने से उत्पादन में भारी व बढ़ोत्तरी होती है। फसल को नुकसान पहुंचा सकता है पानी।

लागत और आमदनी

सह.फसल के रूप में अरहर की खेती करने पर यह 5 साल तक किसानों को कम खर्च में दोगुना लाभ कमा कर देती है। अरहर के साथ ज्वार, बाजरा, उड़द और कपास की खेती कर सकते हैं। अरहर खुद तो पोषण का खजाना होती ही है। साथ ही मिट्टी को भी पोषण प्रदान करती है। अरहर के उत्पादन की बात करें तो करीब 1 हैक्टेयर उपजाऊ और सिंचित भूमि से 25.40 क्विंटल तक उपज ले सकते हैं, वहीं कम पानी वाले इलाकों में भी अरहर 15.30 क्विंटल तक उत्पादन दे देती है। यही कारण है कि प्रमुख दलहनी फसल होने के साथ.साथ इसे नकदी फसल भी कहते हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि विज्ञान केंद्र के अनुसार अरहर की बुवाई के लिए जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के दूसरे सप्ताह तक करनी चाहिए, अगर सिंचाई की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो तो जून के पहले हफ्ते में भी इसकी बुवाई कर सकते हैं। अरहर की बुवाई के लिए किसान इस बात का ध्यान रखें कि खेती की मिट्टी खारी न हो और मिट्टी का पीएच मान 5 से 8 के बीच हो, इसके अलावा जल निकासी वाली हल्की या मध्यम भारी मिट्टी अरहर की बुवाई के लिए ज्यादा ठीक रहती है।

बुवाई के लिए खेत कैसे तैयार करें किसान

बुवाई से पहले किसान खेत की मिट्टी को पलटने वाले कल्टीवेटर हल से अच्छी तरह दो बार जुताई कर लें। जुताई के समय यदि मिट्टी में कीड़ा या दीमक का पता चले तो हेप्टाक्लोर 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिला दें। इसके साथ ही गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद 20.25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के हिसाब से जुताई के समय खेत की मिट्टी में मिला दें।

बुवाई के समय बीज की सही दूरी जरूरी

किसान अरहर की बुवाई से ठीक 48 घंटे पहले 2.5 ग्राम फफूंदी खत्म करने वाली जैसे थीरम अथवा कैप्टान से प्रति किलो बीज में मिलाएं। बुआई के ठीक पहले फफूंद खत्म करने वाली दवा मिलाने के बाद बीज कोराईजोबियम कल्चर और पीएसबी से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। खरीफमें बीज की बुआई की दूरी 60 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंटीमीटर करनी चाहिए।

अरहर में उर्वरक के इस्तेमाल का तरीका

अरहर की फसल को नाइट्रोजन की बहुत कम जरूरत होती है क्योंकि इसकी जड़ों में पाये जाने वाले जीवाणु वायुमंडल से नाइट्रोजन हासिल करके पौधे को पहुंचाता है। बुआई के 40 से 45 दिनों तक 18 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की जरूरत पड़ती है। अरहर को 18 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन 45 किलो फास्फोरस, 25 किलो पोटास और 20 किलो गंधक प्रति हेक्टेयर में डालने की जरूरत पड़ती है।

एजेंसी देना है–

प्रतिष्ठित मासिक समाचार पत्र हलधर किसान के साथ ही इलेक्ट्रानिक प्लेटफार्म किसान प्लस टीवी कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध, अनुसंधान, नई तकनिक, योजनाओं के राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के समावेश के साथ नियमित रुप से प्रकाशित/ प्रसारित हो रहा है। अखबार की प्रतियां नियमित रुप से प्राप्त करने के लिए वार्षिक सदस्यता लेने, एजेंसी/ इलेक्ट्रानिक एवं प्रिंट विज्ञापन प्रकाशन के लिए हमारे वाट्सअप नंबर (88174 02860/ 8989436932) या हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है।

नोट: कृषि, उद्यानिकी, मछली पालन, ऊर्जा, पर्यावरण जैसे विषयों पर लिखे लेख प्रकाशन के लिए भी वाट्सअप नंबर पर भेज सकते है। आपके द्वारा भेजे गए लेख, शोधकार्य या कृषि के क्षेत्र में नई तकनिकी, सफलता हासिल करने संबंधित समाचार को भी प्रमुखता से प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

एमएसपी पर सरकार और किसानों के बीच कौन सी नीति बनी संघर्ष

किरीब दो वर्ष पहले किसानों ने जब अपने आंदोलन के तहत दिल्ली की सीमाओं पर डेरा डाला था, तब कई महीनों तक प्रदर्शन के बाद सरकार के साथ कुछ बिंदुओं पर सहमति बनी और किसान वापस गए। मगर अब एक बार फिर न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी के लिए कानून की मांग सहित कई अन्य मुद्दों के साथ किसानों ने आंदोलनरत है, 'दिल्ली चलो'' के नारे के साथ समय- समय पर दिल्ली की सीमाओं पर प्रदर्शन किए जा रहे है। सवाल है कि आखिर किसानों के पिछले आंदोलन के बाद सरकार के साथ हुए समझौते का क्या स्वरूप था और उसमें बनी सहमति को जमीन पर उतारने को लेकर ऐसी गंभीरता क्यों नहीं दिखी कि किसानों को फिर से सड़क पर उतरने की नौबत आई?

एक अनुमान के मुताबिक, अगर सरकार ने किसानों की मांग मान ली, तो नई दिल्ली की तिजोरी पर करीब 10 लाख करोड़ रुपये का भार आ जाएगा, जबकि किसानों का तर्क दूसरा है। उनको लगता है कि उनकी खेती कारपोरेट के हाथों में जा सकती है। आम तौर पर डेढ़ फसल उत्पादन की लागत पर 30 फीसदी ज्यादा रकम होती है, लेकिन किसानों की मांग इससे कहीं ज्यादा की है।

गौरतलब है कि दो वर्ष पहले किसानों के ऐतिहासिक आंदोलन के बाद केंद्र सरकार को संसद से पारित तीन कृषि कानूनों को रद्द करना पड़ा था। तब सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गारंटी देने का वादा किया था। मगर किसानों की शिकायत है कि सरकार ने अपने वादे पूरे नहीं किए। अब किसानों के ताजा आंदोलन के बाद फिर जो हालात पैदा हो रहे हैं, अगर उसे लेकर सही नीति नहीं अपनाई गई तो सड़कों पर अव्यवस्था की स्थिति पैदा हो सकती है। विचित्र यह भी है कि सरकार की ओर से किसानों को रोकने के लिए जिस तरह सड़क पर कीलें लगाने और बाधाएं खड़ी जैसे उपाय किए गए हैं, उसे एक तरह से विरोध प्रदर्शन को बाधित करने की तरह देखा जा रहा है। जबकि एक स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी को अपने वाजिब मुद्दों के लिए विरोध जताने या प्रदर्शन करने का अधिकार होना चाहिए। यह सरकार के लिए सोचने का वक्त है कि आखिर पिछले आंदोलन के दौरान बनी सहमति के बिंदुओं को लागू करने को लेकर कहां चूक या लापरवाही हुई कि किसान संगठन फिर से अपनी मांगों के साथ सड़क पर आ गए।

संपादकीय

संयुक्त किसान मोर्चा का कहना है कि ताजा प्रदर्शन के जरिए वे सरकार को दो वर्ष पहले किए गए उन वादों को याद दिलाना चाहते हैं, जो आंदोलन को वापस लेने की अपील करते हुए सरकार ने किए थे। वे वादे अब तक पूरे नहीं हुए। वहीं सरकार की ओर से ऐसे संकेत दिए जा रहे हैं कि फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी वाला कानून सभी हितधारकों से परामर्श किए बिना जल्दबाजी में नहीं लाया जा सकता है।

सवाल है कि वादा करने के बावजूद सरकार आखिर अब तक क्या कर रही थी कि इस मसले पर किसानों के बीच स्पष्टता नहीं बन सकी? हालांकि विरोध प्रदर्शन से उपजने वाली अव्यवस्था की आशंका के मद्देनजर सरकार किसानों को रोकने की कोशिश कर रही है, लेकिन अगर किसान संगठन अपनी बात शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से जनता और सरकार के सामने रखना चाहते हैं, तो उन्हें बाधित क्यों किया जाना चाहिए? फिर किसान संगठनों को भी यह खयाल रखने की जरूरत है कि उनके आंदोलन की वजह से कानून.व्यवस्था बिगड़ने की स्थिति और आम जनता के सामने मुश्किलें न पैदा हों। गौरतलब है कि दिल्ली की सीमाओं पर किसानों के जमावड़े की वजह से आम जनता के सामने कई प्रकार की दिक्कतें खड़ी होनी शुरू हो गई हैं। जरूरत इस बात की है कि हालात जटिल होने से पहले सरकार किसान संगठनों से बातचीत का रास्ता निकाले और सहमति के बिंदु तैयार करे।

एमएसपी की कहानी आजकल की नही बल्कि 57 साल पुरानी है। 1965 में केंद्र सरकार ने कृषि लागत व मूल्य आयोग यानी सीएसीपी बनाया, जो एमएसपी को तय करता है। पहली बार 1966.67 में सरकार ने किसानों से एमएसपी पर फसलें खरीदी थी। अभी सरकार 23 फसलों को एमएसपी पर खरीदती है। इसमें 7 अनाज, 6 तिलहन, 5 दलहन और 4 अन्य फसलें शामिल हैं।

सवाल ये है कि अगर सब कुछ तो दुरुस्त है, तो फिर किसान आंदोलन क्यों कर रहे हैं? दरअसल इस आंदोलन के पीछे पुरानी व्यवस्था को और मजबूती वाले भरोसे की मांग है। किसानों की मांग है कि सरकार जो एमएसपी दे रही है, वो स्वामीनाथन आयोग के हिसाब से दें। सरकार एमएसपी पर गारंटी दे यानी उसको कानून बनाए। इससे सभी फसलों को एमएसपी के दायरे में लाया जा सकेगा। एमएसपी से कम कीमत पर कोई व्यापारी अनाज खरीदे, तो उस पर आपराधिक मुकदमा चले।

2 अक्टूबर को लगेगा साल का दूसरा सूर्यग्रहण

आसमान में दिखाई देगी आग की रिंग, भारत में दिखेगा ये दुर्लभ नजारा

हलधर किसान 88174 02860

अजमेर। साल का पहला सूर्य ग्रहण जहां अप्रैल के महीने में लगा था वहीं दूसरा सूर्य ग्रहण आने वाले अक्टूबर के महीने में लगने वाला है।

ज्योतिषाचार्य डॉ. सुदीप जैन अमजेर के अनुसार सूर्य ग्रहण एक खगोलीय घटना है जो तब होती है जब चंद्रमा पृथ्वी और सूर्य के मध्य से होकर गुजरता है, सूर्य ग्रहण कई अलग.अलग तरह के होते हैं, जैसे पूर्ण सूर्य ग्रहण, वलयाकार सूर्य ग्रहण और आंशिक सूर्य ग्रहण। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो ग्रहण लगना किसी उत्सव से कम नहीं है और इसका विशेष धार्मिक महत्व भी है। धार्मिक मान्यतानुसार ग्रहण लगने पर बहुत से कामों को करने की मनाही हो जाती है और ग्रहण लगने के कुछ घंटों पहले से ही सूतक काल शुरू हो जाता है। 2 अक्टूबर 2024 को दूसरा सूर्य ग्रहण दिखाई देगा। ये दुर्लभ खगोलीय घटना वैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण है।यह एक वलयाकार सूर्य ग्रहण होगा। वलयाकार सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा सूर्य को पूरी तरह से नहीं ढंक पाता। इस कारण आसमान में एक आग की रिंग दिखाई देती है। इस तरह के ग्रहण को रिंग ऑफ फायर कहा जाता है। छह घंटे से अधिक समय तक यह सूर्य ग्रहण लगेगा। भारतीय समयानुसार रात 9. 13 बजे शुरू होगा और अगले दिन भारतीय समयानुसार सुबह 3. 17 बजे खत्म होगा।

ज्योतिषाचार्य डॉ. सुदीप जैन

कहां लगेगा सूर्य ग्रहण

भारत में जो लोग इस सूर्य ग्रहण को देखने का इंतजार कर रहे हैं, उन्हें निराश होना पड़ेगा। भारत के हिसाब से यह सूर्य ग्रहण रात में लगेगा, इसलिए यह हमें नहीं दिखेगा। भारत में अदृश्य रहते हुए भी वलयाकार ग्रहण दुनिया के कई देशों में दिखेगा। दक्षिण अमेरिका के उत्तरी हिस्सों, आर्कटिक, अर्जेंटीना, ब्राजील, पेरू, फिजी, चिली और प्रशांत महासागर में इस खगोलीय घटना को देखा जा सकेगा। इस इलाके में मौजूद खगोल विज्ञानी उत्साह के साथ सूर्य ग्रहण का इंतजार कर रहे हैं।

क्या होता है सूर्य ग्रहण

हमारे सौर मंडल में सभी ग्रह सूर्य का चक्कर लगाते हैं। पृथ्वी भी उनमें से एक है। लेकिन चंद्रमा पृथ्वी का चक्कर लगाता है। नासा के मुताबिक जब चक्कर लगाते हुए चंद्रमा जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आ जाए तो यह सूर्य ग्रहण कहलाता है। इस दौरान धरती के कुछ हिस्सों में प्रकाश नहीं पहुंच पाता है। अंतरिक्ष से अगर देखें तो एक विशाल परछाई पृथ्वी की सतह पर दिखाई देगी। वहीं जब चंद्रमा और सूर्य के बीच में पृथ्वी आ जाए तो यह चंद्र ग्रहण कहलाता है।

भारत से सूर्य ग्रहण दिखेगा?

भारत से इस सूर्य ग्रहण को नहीं देखा जा सकेगा। भारत में अब सीधा 21 मई 2031 में सूर्य ग्रहण देखा जा सकेगा। इससे पहले लगने वाला कोई सूर्य ग्रहण भारत से नहीं दिखेगा। सूतक काल को अशुभ समय कहा जाता है। सूतक काल धार्मिक तौर पर वहां मान्य होता है जहां सूर्य ग्रहण लगने वाला है या जहां से देखा जा सकता है। इस चलते भारत में इस सूर्य ग्रहण का सूतक काल मान्य नहीं होगा।

वर्ग पहेली-3

बाएं से दाएं

1. स्वीकारोक्ति, जी (1)
6. हर काम को जानने वाला (6)
7.जाने का आदेश देना, दुत्कारना (1)
8. विष्णु का एक अवतार (3)
10. बुरी आदत (3)
11. प्रतिष्ठा जाती रहना (5)
15. करीब.करीब (4)
16. अपमान (5)
18. बच्चों का छोटा झूला (3)
19. हाथ की एक उंगली का नाम (4)

ऊपर से नीचे

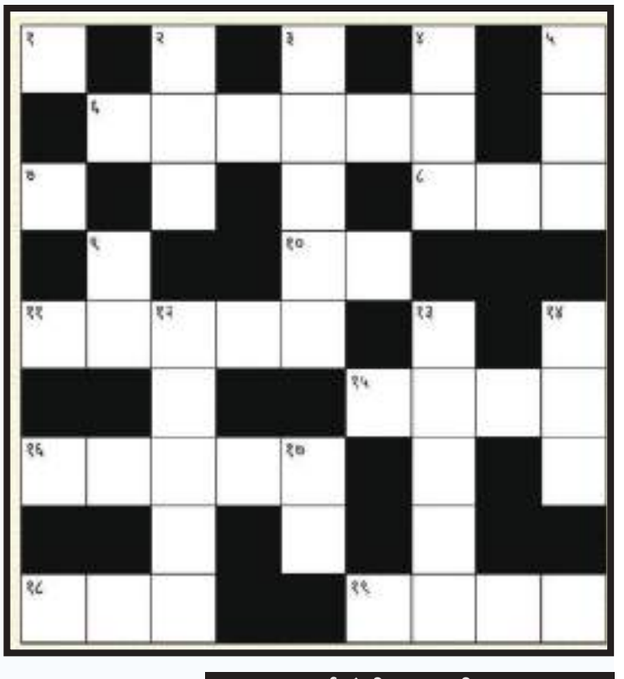

2. तरणताल आदि में विचरण करना (3)
3. सहमति होना (5)
4. निमंत्रण (3)
5. नाच (3)
9. अधिकार (2)
12. हिचकना, बेचैन होना (5)
13. क्रोध या ईर्ष्या भड़काना (मुहावरा) (5)
14. घर के भीतर का खुला भाग (3)
17. जल का स्रोत, सरिता (2)

वर्ग पहेली 2 का सही उत्तर

सैंपल के नाम पर बेवजह कृषि आदान विक्रेताओं को परेशान करना ठीक नहीं: श्री दुबे

कृषि आदान विक्रेता संघ के जिला स्तरीय व्यापारी सम्मेलन में एकजुट हुए खाद.बीज व्यवसायी

हलधर किसान

रतलाम। हमारा देश कृषि प्रधान देश है और हमको गर्व है कि पिछले 5 सालों से मप्र को कृषि कर्मण्य पुरस्कार मिल रहा है। यह उन्नत किस्म के बीजों, उच्च क्वालिटी की कीटनाशक दवाईयों और अच्छी पैदावार देने वाले बीज बनाने वाली कंपनियों, कृषि आदान विक्रेताओं और प्रगतिशील किसान भाईयो को इसका श्रेय जाता है न कि एयर कंडीशनर कमरों में बैठकर योजना बनाने वालो को। उक्त विचार जागरुक कृषि आदान विक्रेता संघ इंदौर के अध्यक्ष श्रीकृष्ण दुबे ने रतलाम में आयोजित महते व्यापारी सम्मेलन के दौरान बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सरकार को मेडिकल. फार्मास्युटिकल के व्यापार में ध्यान देना चाहिए न की कृषि आदान वस्तुओं जैसे बीज. कीटनाशक, जैविक खाद बिक्री करने वालों पर, क्योंकि हम कोई मादक पदार्थ नही बेच रहे है, जिससे मनमाना मुनाफ कमा रहे है। कृषि विभाग की आए दिन सैंपल लेने के नाम पर कि जा रही मनमानी अब नही चलेगी।

निडर होकर करें व्यापार

श्री दुबे ने कृषि आदान विक्रेताओं को किसानों से अच्छा व्यवहार करने की सीख के साथ ही ज्यादातर नकद व्यापार करने की सलाह देते हुए अपील करते हुए कहा कि यदि हम संगठित नही हुए तो आए दिन हमें विभागीय परेशानियों से जुझना होगा। विभागीय कार्रवाई से बिल्कुल न डरें, यदि कोई अधिकारी सैंपल लेने आता है तो उस कार्रवाई की निडर होकर वीडियोग्राफी मोबाइल से करें, क्योंकि सैंपलिंग में कई तरह की लापरवाही बरती जाती और सैंपल फेल होने पर इसका जिम्मेदार व्यापारी को ठहराया जाता है।

ऑनलाईन व्यापार पर कसेंगे लगाम

हमारे राष्ट्रीय संगठन के अध्यक्ष मनमोहन कलंत्री, सचिव संजय रघवंशी, प्रदेश अध्यक्ष मानसिंह राजपुत, मप्र संगठन मंत्री विनोद जैन दिल्ली में सरकार के सामने व्यापारियों की समस्याओं को लगातार उठाते रहे है, जिससे व्यापारियों की कई समस्याओं का निराकरण हुआ है। अब संगठन ऑनलाईन व्यापार करने वाली कंपनियों के खिलाफजोकि बगैर पीसी व बगैर बिल से प्रदेश में कारोबार कर रही है उन पर लगाम लगाने के लिए प्रयासरत है, इसमें हमें भी सहयोग देना होगा। सम्मेलन में विशिष्ट सलाहकार आरआर गुप्ता और संगठन मंत्री किशोर पुराणिक उपस्थित रहे।

रतलाम से सांवरिया एग्रीटेक प्रालि किसान बाजार के डायरेक्टर ओमप्रकाश धाकड़ ने कृषि व्यापार में किस से किस प्रकार से अपने को संबंध रखता है, कैसा वातावरण बनाना है, फर्टिलाइजर के उपयोग और उसके बारे में जानकारी दी। रतलाम से रमेश गर्ग, हंसराज चोपड़ा और संघ के अध्यक्ष मनोज बोराणा ने भी अपने-अपने विचार रखें। सचिव जितेंद्र जैन ने पर्यावरण दिवस पर उपस्थित सभी कृषि आदान व्यापारियों को अधिक से अधिक पौधे लगाने शपथ दिलाई। इस दौरान ऑल इंडिया एग्री इनपुट्स डीलर्स एसोसिएशन नई दिल्ली मध्य प्रदेश कृषि आदान विक्रेता संघ भोपाल और जो भी पदाधिकारी है उनके कांटेक्ट नंबर सहित व्यापार से संबंधित अन्य सामग्रियों का संग्रहण कर प्रकाशित की गई एक डायरी का विमोचन भी अतिथियों ने किया।

सम्मेलन के दौरान वरिष्ठ संरक्षक कांतिलाल मंडलेचा के निधन पर व्यापारियों एवं अतिथियों ने मौन रखकर उन्हें श्रद्धांसुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। समापन पर श्री दुबे सहित अन्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया।

जनपद अध्यक्ष से कि राजनीति की शुरुआत, मोहन केबिनेट में कृषि मंत्री बने 5 बार विधायक रहे एंदल सिंह कंषाना

हलधर किसान (विशेष)। प्रदेश सरकार के कृषि मंत्री एंदल सिंह कंसाना ऐसे नेता है जो केवल पद पर रहते नही बल्कि युवा अवस्था से समाजसेवा के कार्य कर रहे है। सुमावली से विधायक एंदल सिंह कंसाना का जन्म 1 जनवरी 1958 को हुआ था। वे इससे पहले जनपद पंचायत के अध्यक्ष एवं कृषि उपज मंडी समिति के संचालक रहे है। पशुपालन और कृषि में रुचि रखने वाले श्री कंषाना 1993 में दसवीं, 1998 में ग्यारहवीं तथा 2008 में तेरहवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित रहे है।

वर्ष 2018 में हुए चुनाव में कांग्रेस के एंदल सिंह कंसाना विजयी हुई थे। ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थन में कंसाना ने इस्तीफा देकर बीजेपी ज्वाइन कर ली थी। इसके बाद जब साल 2021 उपचुनाव हुए तो यहां से बीजेपी ने एंदल सिंह कंसाना को टिकट दिया और वे जीते भी। आज एंदल सिंह कंसाना को मोहन कैबिनेट में बतौर कृषि मंत्री किसानों के हित में काम कर रहे है। मंत्री कंसाना की खासियत है कि अपने नाम के ही अनुरूप व्यक्तित्व भी रखते थे। अपने समर्थकों और विरोधियों के प्रति भी उनका रुख उन्हें बाकियों से अलग करता है। यही वजह है कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के बावजूद कांग्रेस के पदाधिकारियों से आज भी उनके अच्छे संबंध है।

मध्य प्रदेश की सियासत में चंबल का दबदबा हमेशा रहा है, क्योंकि चंबल के नेताओं की सियासत उनके अदब से पहचानी जाती है। मुरैना जिले के सुमावली विधानसभा क्षेत्र में आने वाले नायकपुरा गांव के ऐंदल सिंह कंसाना पांच बार विधायक बने और मंत्री पद तक पहुंचे।

मंत्री बनने के बाद उनके बड़े निर्णयों में

मंडी व्यापारियों के लाइसेंस की अवधि 5 साल से बढ़ाकर 30 साल करना उनका बड़ा निर्णय रहा। बता दें कि प्रदेशभर की मंडियों में करीब 65 हजार से ज्यादा व्यापारी हैं, जिन्हें इससे फायदा हो रहा है। अब उन्हें हर 5 साल में लाइसेंस का नवीनीकरण नहीं कराना पड़ेगा।

कृषि मंत्री ऐंदल सिंह कंसाना ने एक और सौगात दी है और वाणिज्यिक संव्यवहार के लिए व्यापारी लाइसेंस फीस को 25 हजार से घटाकर 5 हजार रुपये कर दिया है। इतना ही नहीं प्रोसेसर मैन्युफैक्चरर के लाइसेंस पर लगने वाली एक लाख रुपये की प्रतिभूति राशि को भी समाप्त कर दिया गया है। शासन द्वारा लिए गए निर्णयों से मंडी व्यापारियों में खुशी का माहौल है।

कृषि क्षेत्र में देश कर रहा उत्तरोत्तर प्रगति

मंत्री कंसाना का कहना है कि कृषि के क्षेत्र में किसान हितैषी योजनाओं के चलते खाद्यान्न के मामले में भारत बहुत अच्छी स्थिति में है और यह गौरव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार की किसान हितैषी नीतियों,किसानों के अथक परिश्रम व कृषि वैज्ञानिकों के कुशल अनुसंधान के कारण हासिल हुआ है। लेकिन भारत आज जिस मुकाम पर है ।

जैविक खेतों को बढ़ावा जरुरी

कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि हमें प्राकृतिक और जैविक खेती की ओर आगे बढ़ना है। इसके लिये शासन स्तर से किये जा रहे प्रयासों से किसानों को आगे बढ़कर लाभ लेना चाहिए। कृषि मंत्री ने किसानों से कहा कि नवीन तकनीकों का पारम्परिक खेती में समावेश कर उनका लाभ लें। कृषि वैज्ञानिकों से भी कहा कि किसानों को खेती से बेहतर लाभ प्राप्त करने के लिये उन्नत तकनीकों से अवगत करायें।

मिलेट्स के लिए आगे आएं किसान

अन्न उत्पादक किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए उत्पादक किसानों के हित में ऐतिहासिक फैसला लिया है। उन्होंने रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना को लागू करने का निर्णय लिया है। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री ऐंदल सिंह कंषाना ने बताया कि इसमें श्री अन्न कोदो.कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा आदि के उत्पादन करने वाले किसानों को प्रति किलो 10 रूपए की अतिरिक्त राशि प्रोत्साहन स्वरूप प्रदान की जाएगी। यह राशि सीधे किसानों के खाते में अंतरित की जाएगी।

यह है को दो.एक की योजना-

मध्यप्रदेश में कोदो.कुटकी की खेती मण्डला, डिण्डोरी, बालाघाट, छिन्दवाड़ा, अनूप्पुर, सीधी, सिंगरौली, उमरिया, शहडोल, सिवनी और बैतूल जिलों में होती है। कोदो.कुटकी के किसानों की आय में वृद्धि के लिए फसल उत्पादन, भण्डारण, प्रोसेसिंग, मार्केटिंग, उपार्जन, ब्राण्ड बिल्डिंग के साथ वैल्यू चेन विकसित करने के उद्देश्य से रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना लागू की गई है।

आखिर क्यों खेती में इजराइली तकनिक को माना जाता है नंबर -1?

हलधर किसान. भोपाल। इजराइल ने कृषि के क्षेत्र में कुछ ऐसी तकनीक विकसित की हैं, जो पूरी दुनिया के लिए सीख बन गई है। भारतीय किसान भी इस तकनीक का इस्तेमाल सीखकर मोटा मुनाफा ले रहे है। इज़राइल में एक साल में किसान एक की बजाए 3.3 फसलें उगा रहे हैं, इस तकनीक में पानी अनावश्यक बर्बाद नहीं होता और हर हिस्से में तरीके से सिंचाई हो जाती है।

साल 1948 में इज़राइल एक देश के तौर पर अस्तित्व में आया था। मिडिल ईस्ट में बसा यह देश क्षेत्रफल के हिसाब से भारत के मिजोरम राज्य जितना है। क्षेत्रफल के मामले में भारत इजराइल से डेढ़ सौ गुना बढ़ा है। इज़राइल जब बना था, तब इज़राइल के पास कुछ भी नहीं था। ना खेती करने के लिए सही जमीन थी, ना ही कोई तकनीक। लेकिन दशकों के बाद अब इजरायल खेती की तकनीक के मामले में दुनिया के बड़े देशों को पछाड़ रहा है। इजरायल की तकनीक दुनिया के कई देश अपना रहे है। चलिए जानते हैं खेती की तकनीक के मामले में क्यों है इजराइल नंबर 1?

इज़राइल में हैं सिंचाई की अलग तकनीक

पिछले कुछ दशकों में खेती की तकनीक के मामले में इज़राइल की तरक्की बेमिसाल है। इसराइल ने खेती के लिए ऐसी तकनीकें ईजाद की हैं जिसे अब पूरी दुनिया आजमा रही है। इजराइल में सिंचाई के लिए अलग तरीके की तकनीक इस्तेमाल की जाती है।

पानी की ड्रिप का अलग तरह से इस्तेमाल किया जाता है, जिससे फसल की उत्पादन क्षमता बढ़ जाती है। अक्सर भारत में कई टन अनाज स्टोरेज में सड़ जाता खराब हो जाता है, लेकिन इज़राइल ने अनाज स्टोर करने के लिए अलग तरह के बॉक्स बनाए हैं। जहां न तो अनाज में खराब होता है और साथ ही यह हवा और पानी से भी दूर रहता है। दुनिया के कई और देश इस तकनीक का इस्तेमाल कर रहे है।

कीटों में फर्क करने वाली कीटनाशक

इज़राइल ने एक ऐसी कीटनाशक दवाई बनाई है, जो फसल के लिए जरूरी और फसल के लिए खतरनाक कीटों में फर्क कर लेती है। यह उन कीटों को फसल से दूर रखती है, जो फसल के लिए हानिकारक होते हैं, तो वहीं पॉलिनेशन के लिए जो भौंरें होते हैं, उन्हें इस दवाई से नुकसान नहीं होता। इस दवाई से स्ट्रॉबेरी की खेती में खूब बढ़ोतरी हुई है।

खेती के लिए सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल

इज़राइल के कृषि वैज्ञानिकों ने खेती के लिए एक सॉफ्टवेयर बनाया है। इस सॉफ्टवेयर के जरिए किस घर बैठे ही खेती से जुड़ी नई.नई तकनीक है जान लेते हैं,तो वहीं उन्हें कोई समस्या आती है तो इस सॉफ्टवेयर के जरिए उसका भी समाधान हो जाता है। डेरीफार्मिंग में भी इज़राइल ने क्रांति की है, निगरानी, खाने की देखभाल और अन्य प्रबंधनों के ज़रिए इज़राइल ने दुग्ध उत्पादन की तादाद में काफी इजाफा किया है। चीन ने प्रभावित होकर अपने अधिकारियों को पूरी प्रक्रिया समझने के लिए भेजा और पूरी तरह सीखा।

मनुष्य प्रजाति के द्वारा प्रकृति के साथ की जा रही मनमानी और अंधाधुंध विकास और उससे उपजी परिस्थिति

सुनील देशपांडे
स्वरचित और मौलिक

हे मनुष्य तुम मिटा देना अपने आसपास से सारे कीड़े मकोड़े, काक्रोच, चूहे, साँप, बिच्छू और सारा प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ देना। फिर अपने बिगड़े हुए मानसिक संतुलन को सुधारने के लिए पालना तोता और लव बड्र्स जो तुम्हारे कहे अनुसार गीत गाये...

जला देना सारी घास, और अपने लिए अनुपयोगी जंगली पौधे भी, काट देना तुम सारे कीकर और बबूल और संदेश के पेड़, और फिर अपनी छत पे एक टेरेस गार्डन बनाना जिसमें छोटे बड़े गमलों में कुछ पौधे हो जो केवल तुम्हारे लिए फूल और सब्ज़ी पैदा करे।

तुम सुखा देना सारे नाले पोखर
बुझ देना सारे कुंए और बावड़ी, और फिर अपने घर में धरती का सीना चीरकर एक ट्यूबवेल खोदना जिसमें केवल तुम्हारे लिए पानी हो...

तुम हाथीयों को मार कर निकाल लेना उनके दांत ताकि तुम अपनी बैठक को सजा सको
बाघों को फंदे में फंसाकर देना उन्हें एक दर्दनाक मौत ताकि अपने पुरुषत्व के लिए उनके पंजे और नाखून खींच सको। फिर पालना एक विदेशी कुत्ता जिसके गले में तुम्हारे नाम का पट्टा हो और जिसे तुम रोज़ घुमाने ले जाओ और अपने पशुप्रेमी होने की शान बघारो...

तुम सागर को पीछे धकेल कर अपनी हद बढ़ा लेना
तुम नदियों को अपने गंदे कचरे को फेंकने का कूड़ेदान बना देना
तुम उपजाऊ खेतों को बंजर बना के उसमें कारखाने उगा लेना
और अपने बगीचे में लगा लेना हरी गद्देदार घाँस जो तुम्हारे मन माफिक करीने से कटी हुई हो...
तुम गर्मी से बचने को एसी खूब चलाना
तुम पड़ोस की दुकान से दही लाने भी स्कूटर से जाना
और शौक के लिए ही लौंग ड्राइव पे धुंआ उड़ाती गाड़ी दौड़ाना
और फिर एक 5 किलोमीटर की मैराथन में दौड़कर पर्यावरण बचाने का राग अलापना..
हे मनुष्य तुम्हारा ये दोगला बर्ताव ज़्यादा समय तक नहीं चल पाएगा
प्रकृति से खिलवाड़ का नतीजा तुम्हें अवश्य ही तुम्हें बर्बाद कर जाएगा

इसी प्रकृति का ही कोई सूक्ष्म सा जीवाणु सिपाही आकर सिर्फ़सर्दी खांसी से ही तुम्हारी सांसे रोक देगा। आएगी कोई एक बड़ी सी सुनामी की लहर जो तुम्हारे सारे अतिक्रमण एक झटके में हटा देगी। फूटेगा कोई आग का झरना जो तुम्हें तुम्हारे सारे कूड़े करकट सहित जला के राख कर देगा । हिल जाएगा सिर्फ़कुछ मिनिटो के लिये धरती का एक हिस्सा और तुम्हारे बड़े घर और कारख़ाने भड़भड़ा के गिर जाएँगे, या प्रकृति अपने मौसम का समय चक्र थोड़ा सा आगे बढ़ा देगी और तुम्हारी फ़सले बिगड़ जायेंगी, फल पूरा आकार नहीं ले पायेंगे और तुम सोचोगे की ये क्या और कैसे हो रहा गर्मी में खूब गर्मी होगी और ठण्ड में तुम्हारी रूह तक कांप उठेगी, बारिश में बादल फटेंगे और बाढ़ तुम्हारी धुंआ फेंकती कारे, क़रीने से सजे बाग बगीचे सब बहा ले जाएगी

या हो सकता है कोई बड़ा सा गोला आकर टकराए तुम्हारी बनाई कृत्रिम दुनिया से और नामो निशान मिटा जाए तुम्हारा इस धरती से और रह जाये बस कीड़े मकोड़े और घांस ही जिन्हें तुम ख़त्म करना चाहते थे क्योंकि तुम समझ ही नहीं पा रहे कि जैसे प्रकृति ने तुम्हें पैदा किया है वैसे ही बाक़ी सब पेड़ पौधे घास कीड़े मकोड़े जानवर भी उसी के बच्चे है और यदि वे तुम्हारी नज़र में बेकार है तो तुम्हें भी इस धरती पर रहने का कोई अधिकार नहीं है ...।

नूरजहां आम के वजूद पर संकट!

इस सीजन में नही हुई पैदावार, बचे है गिनती के पेड़

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र हलधर किसान

भोपाल। आमों की मल्लिका के रुप में पहजाने जाने वाले दुर्लभ नूरजहां आम की प्रजाति पर गहराते संकट ने शासन की चिंता बढ़ा दी है। मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले के कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में नूरजहां आम के गिने. चुने पेड़ बचे हैं। अपने भारी. भरकम वजन के चलते इसे आमों की मल्लिका के रूप में जाना जाता है। इस आम के पेड़ों की संख्या कम होने को लेकर सरकार चिंतित है।

सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने उद्यानिकी विभाग को निर्देश दिए कि आम की इस खास प्रजाति को आने वाली पीढियों के वास्ते बचाने के लिए इसके पेड़ों की तादाद बढ़ाने के वैज्ञानिक प्रयास तेज किए जाएं। अधिकारियों ने बताया कि कट्ठठीवाड़ा क्षेत्र में नूरजहां आम के केवल 10 फलदार पेड़ बचे हैं। यह प्रजाति अपने भारी.भरकम आम के लिए मशहूर है। इंदौर संभाग के आयुक्त दीपक सिंह ने उद्यानिकी विभाग की समीक्षा बैठक में कहा कि अलीराजपुर जिले में आम की प्रसिद्ध किस्म नूरजहां के संरक्षण के लिए वैज्ञानिक प्रयास तेज होने चाहिए। यह चिंता का विषय है कि जिले में आम की इस किस्म के गिनती के पेड़ बचे हैं। उन्होंने उद्यानिकी विभाग को निर्देश दिए कि टिश्यू कल्चर की सहायता से नूरजहां के नये पौधे तैयार किए जाएं।

एक फल की कीमत 2000 रुपए

कट्ठीवाड़ा के अग्रणी आम उत्पादक शिवराज सिंह जाधव ने बताया कि इस बार नूरजहां की पैदावार बहुत कम रही है। मेरे बाग में इसके तीन पेड़ों में कुल 20 फल लगे हैं। बेमौसम बारिश और आंधी से आम की फसल को नुकसान हुआ है। उन्होंने बताया कि पिछले साल उनके बाग में नूरजहां के सबसे भारी फल का वजन करीब 3.8 किलोग्राम रहा था और इस एक फल को उन्होंने 2.000 रुपये में बेचा था। जाधव ने बताया कि नूरजहां के पेड़ों पर जनवरी से बौर आने शुरू होते हैं और इसके फल जून तक पककर बिक्री के लिए तैयार हो जाते हैं। इनकी गुठली का वजन 150 से 200 ग्राम के बीच होता है।

एक आम का वजन 3.5 किलो

अलीराजपुर के कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. आरके यादव ने बताया कि कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में नूरजहां आम के केवल 10 फलदार पेड़ बचे हैं, लेकिन हम अलग- अलग जगहों पर कलम लगाकर अगले पांच सालों में इनकी तादाद बढ़ाकर 200 पर पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं। हम इस प्रजाति को विलुप्त नहीं होने देंगे। उन्होंने बताया कि कुछ दशक पहले नूरजहां आम का अधिकतम वजन 4.5 किलोग्राम तक हुआ करता था जो अब घटकर 3.5 किलोग्राम से लेकर 3.8 किलोग्राम के बीच रह गया है।

विश्व पर्यावरण दिवस विशेष...

विकसित होते शहर, हरियाली कम और कंक्रीट के जंगल ज्यादा

हलधर किसान

भोपाल. .विश्व पर्यावरण दिवस हमें यह याद दिलाता रहेगा कि हमने अपने पर्यावरण के साथ क्या गलत किया है और इसे सही करने के लिए हमें क्या करने की जरूरत है।. इस विश्व पर्यावरण दिवस पर शपथ लेते हैं कि प्रकृति को नुकसान पहुंचाना बंद करेंगे, ताकि पृथ्वी ग्रह को रहने के लिए अधिक स्वस्थ, हरा.भरा और खुशहाल स्थान बनाया जा सके। आइए एक सकारात्मक बदलाव लाने के लिए हाथ मिलाएं..।

विश्व पर्यावरण दिवस लगभग 100 से अधिक देशों के लोगों के द्वारा 5 जून को मनाया जाता है। इस दिन पूरी दुनिया में पर्यावरण से जुड़ी अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। मानव और पर्यावरण एक.दूसरे पर निर्भर होते हैंद्य पर्यावरण सुरक्षा के उपायों को लागू करने के लिए हर उम्र के लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है। पेड़.पौधे लगाना, साफ.सफाई अभियान, रीसाइकलिंग, सौर ऊर्जा, बायो गैस, बायो खाद, सीएनजी वाले वाहनों का इस्तेमाल, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग जैसी तकनीक अपनाने पर बल दिया जाता है। सड़क रैलियों, नुक्कड़ नाटकों या बैनरों से ही नहीं, एसएमएस, फेसबुक, ट्विटर, ईमेल के जरिये लोगों को जागरूक किया जाता है। स्कूलों में बच्चों के लिए पेंटिंग, वाद.विवाद, निबंध.लेखन जैसी राष्ट्रीय.अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

जैसे.जैसे शहर विकसित हो रहे हैं, हरियाली कम और कंक्रीट के जंगल बढ़ते जा रहे हैं। हर साल प्रदूषण के मामले में बढ़ोतरी हो रही है। नवंबर.दिसंबर माह में प्रदूषण की वजह से मौत के आंकड़े भी बढ़ जाते हैं। प्रदूषण लगातार हमारी सांसें कम कर रहा है। नए पैदा होने वाले कई बच्चों पर इसका असर भी दिख रहा है। भारत की सत्तर प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। अब वह भी शहरों में पलायन हेतु आतुर है जबकि शहरी जीवन नारकीय हो चला है। शहरों में हरियाली का नामोनिशान नहीं है, बहुमंजिली इमारतों के जंगल पसरते जा रहे हैं। वहाँ अच्छी सड़कें, आवागमन के साधन, स्कूल.कॉलेज, अस्पताल व अन्य आवश्यक सुविधाएं सुलभ हैं।

पर्यावरण विषय पर संयुक्त राष्ट्र महासभा का आयोजन किया गया था। इसी चर्चा के दौरान विश्व पर्यावरण दिवस का सुझाव भी दिया गया और इसके दो साल बाद 5 जून 1974 से इसे मनाना भी शुरू कर दिया गया। 1987 में इसके केंद्र को बदलते रहने का सुझाव सामने आया और उसके बाद से ही इसके आयोजन के लिए अलग अलग देशों को चुना जाता है। इसमें हर साल 143 से अधिक देश हिस्सा लेते हैं और इसमें कई सरकारी, सामाजिक और व्यवसायिक लोग पर्यावरण की सुरक्षा, समस्या आदि विषय पर बात करते हैं।

पृथ्वी के सभी प्राणी एक.दूसरे पर निर्भर है तथा प्रत्येक पदार्थ एक.दूसरे से प्रभावित होता है। इसलिए और भी आवश्यक हो जाता है कि प्रकृति की इन सभी वस्तुओं के बीच आवश्यक संतुलन को बनाये रखा जाये। इस 21वीं सदी में जिस प्रकार से हम औद्योगिक विकास और भौतिक समृद्धि की ओर बढ़े चले जा रहे हैं, वह पर्यावरण संतुलन को समाप्त करता जा रहा है। अनेकानेक उद्योग.धंधों, वाहनों तथा अन्यान्य मशीनी उपकरणों द्वारा हम हर घड़ी जल और वायु को प्रदूषित करते रहते हैं। वायुमंडल में बड़े पैमाने पर लगातार विभिन्न घटक औद्योगिक गैसों के छोड़े जाने से पर्यावरण संतुलन पर अत्यंत विपरीत प्रभाव पड़ता रहता है।

प्रदूषण के मुख्य कारण

मुख्यतः पर्यावरण के प्रदूषित होने के मुख्य कारण हैं . निरंतर बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण, वाहनों द्वारा छोड़ा जाने वाला धुआँ, नदियों, तालाबों में गिरता हुआ कूड़ा.कचरा, वनों का कटान, खेतों में रसायनों का असंतुलित प्रयोग, पहाड़ों में चट्टानों का खिसकाना, मिट्टी का कटानआदि। हमारी धरती पर पिछले कुछ सालों में भूकंप, बाढ़, सूनामी जैसी घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। प्रकृति की इन आपदाओं में जान.माल का खूब नुकसान होता है। दरअसल, हमारी धरती के ईको.सिस्टम में आए बदलावों और तेजी से बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही ये सब हो रहाहै। अगर यही हाल रहा तो 2030 तक हमें रहने के लिए दूसरे प्लेनेट की जरूरत होगी। दिल्ली में हर तरह के प्रदूषण का स्तर काफी तेजी से बढ़ रहा है। सबसे अधिक प्रदूषण हवा में है। सड़क पर उड़ती धूल, उद्योग, वाहनों का धुआं इतना अधिक है कि अब सुबह के समय ताजी हवा में भी प्रदूषण पाया गया है। यहां बड़ी संख्या में निकलने वाले कूड़े को रीसाइकिल करना भी काफी मुश्किल भरा काम है। इसके अलावा ध्वनि और जल प्रदूषण भी चरम पर है। लोगों को भी इसमें योगदान देना हैए इसके लिए वो अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखें। सड़क पर कूड़ा ना फेंके, कूड़ा रीसाइकल के लिए भेजें। प्लास्टिक, पेपर, ई.कचरे के लिए बने अलग. अलग कूड़ेदान में कूड़ा डाले ताकि वह आसानी से रीसाइकल के लिए जा सके। वाहन चालक निजी वाहन की बजाय कार.पूलिंग, गाडियों, बस या ट्रेन का उपयोग करें। कम दूरी के लिए साइकिल चलाना पर्यावरण और सेहत के लिहाज से बेहतर है। गमलों में लगे पौधों को बॉल्टी.मग्गे से पानी दें। अतः हमें संकल्प लेना चाहिए कि अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाकर अपने पर्यावरण को बचायेंगे। दुनियाभर के कई क्षेत्र पानी के अत्यधिक उपयोग, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों के कारण पानी की कमी का सामना कर रहे हैं। इसका पारिस्थितिकी तंत्र, कृषि और मानव आबादी पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और मृदा प्रदूषण सहित विभिन्न रूपों में प्रदूषण एक प्रमुख चिंता का विषय बना हुआ है।

किसी ने सही कहा है कि हम बदलें तो युग बदलेगा.. वास्तव में जग या युग बदलना है तो हमें उसकी शुरुआत स्वयं से करनी होगी।

कब से मनाया जा रहा पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण हेतु पूरे विश्व में मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र ने पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने हेतु वर्ष 1972 में की गई थी। इसे 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन में चर्चा के बाद शुरू किया गया था। 5 जून 1974 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया था।1972 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानव

अफ्रीकी देश जिबूती में वातावरण में छोड़े गए लाखों जेनेटिकली मॉडिफाइड मच्छर, बीमारी फैलाने नही रोकेंगे मलेरिया

अंतर्राष्ट्रीय (जीव)। अब तक आपने मच्छरों के काटने, बीमारियां फैलाने की बातें सुनी होगी, लेकिन क्या आपने कभी सुना है कि मच्छर मलेरिया जैसी घातक बीमारी रोक सकते है, जी, हां ये पहली बार है, जब लैब में बने मच्छरों को पूर्वी अफ्रीका में खुले माहौल में छोड़ा गया है। इसका मकसद,मच्छरों की एक ऐसी प्रजाति को फैलने से रोकना है, जो मलेरिया की बीमारी फैलाते हैं।

वातावरण में छोड़े गए एनोफेलीज़ स्टीफेंसी मच्छर काटते नहीं हैं, इनको ब्रिटेन की जैव प्रौद्योगिकी कंपनी ऑक्सीटेक ने विकसित किया है। इन मच्छरों में एक जीन होता है, जो मादा मच्छरों को प्रौढ़ होने से पहले ही खत्म कर देता है। पूरे अफ्रीका महाद्वीप की बात करें, तो ऐसा दूसरी बार किया गया है। अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन का कहना है कि इसी तरह की तकनीकों को ब्राजील, केमैन द्वीप समूह, पनामा और भारत में आजमाया गया था और वो काफी कामयाब रही थीं। सीडीसी का कहना है कि 2019 के बाद से पूरी दुनिया में एक अरब से ज़्यादा जेनेटिकली मॉडिफाइड मच्छर खुले माहौल में छोड़े जा चुके हैं।

इन मच्छरों की पहली खेप को हाल ही में जिबूती शहर के अम्बोउली उपनगरीय इलाके में खुली हवा में छोड़ा गया था।

ये परियोजना. ऑक्सिटेक लिमिटेड, जिबूती की सरकार और एक गैर सरकारी संगठन एसोसिएशन म्युचुआलिस के बीच आपसी साझेदारी से शुरू की गई है। ऑक्सिटेक के प्रमुख ग्रे फ्रेंडसेन ने बताया हमने अच्छे मच्छर बनाए हैं, जो काटते नहीं हैं। बीमारियां नहीं फैलाते, और जब हम इन दोस्ताना मच्छरों को हवा में छोड़ते हैं, तो ये जंगली प्रजाति वाली मादा मच्छरों के साथ प्रजनन करने की कोशिश करते हैं।

प्रयोगशाला में बने इन मच्छरों में इनकी तादाद सीमित करने वाला एक जीन होता है, जो मादा मच्छरों के बच्चों को बड़े होकर प्रजनन की उम्र तक पहुंचने से रोक देता है।

इस परियोजना में जो वैज्ञानिक लगे हुए हैं, उनका कहना है कि जंगली नस्ल और लैब में बने मच्छरों के प्रजनन से पैदा हुए मच्छरों में केवल नर ही ज़िंदा बचते हैं, पर आखिरकार वो भी मर जाते हैं। 2018 में बर्किना फासो में नपुंसक एनोफेलीज कॉल्युजी मच्छरों को वातावरण में छोड़ा गया था, इनके उलट, इस नई प्रजाति (एनोफेलीज़ स्टीफेंसी) के मच्छर अपनी नई पीढ़ी को जन्म दे सकते हैं।

प्रयोगशाला में बने मच्छरों को खुले में छोड़ने की ये परियोजना जिबूती दोस्ताना मच्छर कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसकी शुरुआत दो साल पहले की गई थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एनोफेलीज स्टीफेंसी मच्छरों की नस्ल को फैलने से रोकना है। इंसानों को काटने वाली मच्छरों की इस प्रजाति का पता जिबूती में 2012 में लगाया गया था। उस समय जिबूती, मलेरिया को जड़ से खत्म करने के मुहाने पर था। तब देश में मलेरिया के 30 मरीज पाए गए थे। उसके बाद से जिबूती में मलेरिया की बीमारी में जबरदस्त इजाफा होता जा रहा है और 2020 इसके मरीजों की तादाद 73 हजार तक पहुंच गई थी। मच्छरों की ये नस्ल अब अफ्रीका के छह अन्य देशों. इथियोपिया, सोमालिया, कीनिया, सूडान, नाइजीरिया और घाना में भी पाई जाती है।

कपास की टॉप 5 किस्में, जो देती है प्रति एकड़ में 25 क्विंटल तक उत्पादन

हलधर किसान. कृषि। कपास एक नकदी फसल है, जो किसानों के बीच सफेद सोने के रुप में पहचान बनाए हुए है। खरीज सीजन लगभग शुरू होने को है और जून के प्रथम सप्ताह से इसकी बुवाई करना किसान शुरू कर देते हैं। इसकी खेती सिंचित और असिंचित दोनों प्रकार की मिट्टी में की जाती है। वैसे तो बाजार में कपास बीजों की कई कंपनियां कई वैरायटी में बीज उपलब्ध करा रही है, इनमें से टॉप 5 उन्नत किस्मों के बारे में जानें...

सुपरकॉट बीजी-2. 115 किस्म

ये कपास की सबसे उन्नत किस्मों में से एक माना जाता है। किसान इसकी खेती सिंचित व असिंचित दोनों क्षेत्रों में कर सकते है। बुवाई मध्यम और भरी भूमि में आसानी से कर सकते हैं। इस कपास की बुवाई करने के बाद लगभग 160 से 170 दिनों में इसकी फसल तैयार हो जाती है। किसान इस किस्म की कपास की खेती करके प्रति एकड़ से लगभग 20 से 25 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

रासी आरसीएच 773 किस्म

रासी आरसीएच 773 किस्म के पौधे आपको एकदम हरे भरे देखने को मिल जाते हैं। कपास की यह किस्म रस चूसने वाले कीड़ों के प्रति सहनशील होती है। एक एकड़ में खेती करते हैं तो 20 से 22 क्विंटल तक उपज प्राप्त कर सकते हैं। इसकी खेती सिंचित और असिंचित दोनों क्षेत्रों में की जा सकती है।

. इंडो उस 936 बीजी-2 किस्म

इंडो उस 936 बीजी-2 किस्म की खेती से किसान प्रति एकड़ भूमि पर 15 से 20 क्विंटल उत्पादन प्राप्त करते हैं। कपास की यह किस्म भी चूसक कीड़ो प्रति सहनशील है। इसकी खेती हल्की और माध्यम भूमि पर आसानी से की जा सकती है, बुवाई के बाद से इसकी फसल को तैयार होने में 155 से 160 दिनों का समय लगता है।

.अजीत 199 बीजी-2 किस्म

अजीत 199 बीजी-2 किस्म, कपास की सबसे अच्छे किस्मों में से एक मानी जाती है। इस किस्म की कपास चूसक कीड़ो के लिए सहिष्णु होती है। किसान इस किस्म की खेती सिंचित और असिंचित क्षेत्रों में कर सकते हैं। वाई के बाद से इसकी फसल को तैयार होने में 145 से 160 दिनों का समय लगता है। यदि किसान इस किस्म की कपास की खेती एक एकड़ खेती में करते हैं, तो 22 से 25 क्विंटल तक उपज प्राप्त कर सकते है।

महिको बाहुबली एमआरसी 7361 किस्म

महिको बाहुबली एमआरसी 7361 किस्म यह एक मध्यम समय में पकनेवाली किस्म है। किसान इस किस्म की खेती सिंचित और असिंचित क्षेत्र में कर सकते हैं। यदि किसान एक एकड़ में इस किस्म की कपास की खेती करते हैं, तो 20 से 25 क्विंटल तक उपज प्राप्त कर सकते हैं।

182 शाखाओं में सीसीबी ने रोपे एक हजार पौधे

हलधर किसान। विश्व पर्यावरण दिवस पर खरगोन जिले में जिला सहकारी केंद्रीय बैंक की सभी 182 बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि साख संस्थाओं एवं बैंक शाखाओं में एक साथ नीम, बरगद, पीपल, सहित विभिन्न प्रजातियों के लगभग एक हजार पौधों का वृक्षारोपण किया गया।

कर्मचारियों ने 5-5 पौधे संरक्षण की ली शपथ

जिले में जिलास्तरीय वृक्षारोपण का कार्यक्रम जिला सहकारी केंद्रीय बैंक एवं इफकों के संयुक्त तत्वावधान में सहकारी संस्था बन्हेर में रखा गया। यहां बतौर मुख्य अतिथि उप आयुक्त सहकारिता अम्बरीश वैद्य ने कहा कि दुनियाभर में प्रदूषण तेजी से फैल रहा है, बढ़ते प्रदूषण के कारण प्रकृति खतरे में है। प्रकृति जीवों को जीवन जीने के लिए हर जरूरी चीज उपलब्ध कराती है। ऐसे में अगर प्रकृति प्रभावित होगी तो जीवन प्रभावित होगा। प्रकृति को प्रदूषण से बचाने के उद्देशय से पर्यावरण दिवस मनाने की शुरूआत हुई थी। आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सहकारी क्षेत्र के लोगों के द्वारा वृक्षारोपण कर जो पहल की गई है वह अनुकर्णीय एवं प्रशंसनीय है। जो वृक्षारोपण किया जा रहा है उन्हें कर्मचारीवार आबंटित किया जाकर उनके संरक्षण की जिम्मेदारी दी जावेगी, ताकि शत- प्रतिशत पौधे जीवित रहे।

इस अवसर पर बैंक के सीईओ पीएस धनवाल ने कहा कि पौधे लगाकर मात्र औपचारिकता नही की जाना चाहिए, बल्कि मन से उनका संरक्षण किया जाना चाहिए। ऐसा करने से आत्म संतोष मिलता है। पौधरोपण के दौरान शपथ भी करवाई गई कि, भविष्य में वह भी प्रतिवर्ष कम से कम 5 वृक्ष लगाकर उनका संरक्षण करेगें ताकि वे पोषित होकर वृक्ष का रूप धारण कर सके। इफको के जिला प्रतिनिधि तुकेश मनाथे ने कंपनी के प्रोडक्टों के बारे में किसानों को जानकारी दी एवं उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। संस्था घुघरियाखेडी के द्वारा रासायनिक उर्वरक एवं किटनाशक दवाइ छिड़काव के लिए ड्रोन का प्रदर्शनकर इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया।

इस मौके पर अपेक्स बैंक संभागीय शाखा प्रबंधक गणेश यादव, डीएमओ शवेतासिंह, बन्हेर संस्था के प्रगतिशील कृषक प्रेमलाल मौरे, राजेन्द्र पटेल, डोंगर यादव, रामलाल राठौर, कमल मुकाती सहित संस्था कार्यक्षैत्र कृषक सदस्य बडी संख्या में उपस्थित थे।

स्वामी विवेक जैन, प्रकाशक विवेक जैन, मुद्रक कैलाश महाजन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित एवं 26/1, विवेकानंद कॉलोनी, वार्ड नंबर 5, खरगोन से प्रकाशित, संपादक विवेक जैन।.RNI No. MPHIN/2022/85285, मोबा. नं.98262 25025, 94254 89337 (समस्त प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)।